

पोथी जाबाबुदारी की अरमान मंजरी की छे

॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ जाया भूषणदाह
 विधनहरननुमहोसदाः गनपतिहोऊसहा
 य विनतीकरजोरैकरैदीजैग्रंथवनाय १
 जिहिकीनोपरंयंचसवअयनीइच्छायायः ता
 कौहोवंदनकरौहाथजोरिसिरनाय २ करु
 नाकरियोषतसदासकलसृष्टिकेपांनः औ
 मेइश्वरकोहीधैरहौरैनदिनध्यांन ३ मेरेम
 नमेंउमरहोअसीकौकहिजाय ४ रागीम
 नमिलिस्पांसोमनयोनगहरेलाल यहअ
 चिरंजउजलनयौतज्यौमैलतिहिकाल ५
 ॥ अथ चतुरविधिनायकः ॥ एकनारिसौंहि
 तकरैसोअनुकूलवयानिं वऊनारीसौंप्री
 तिसमताकौदछिनजांनि ६ मीठीवातैसव
 कहैकरिकैवौहतविगारः आवतलाजना
 धिष्टकौंकियैकोटिधिकार ७ ॥ अथनाय
 कालखन ॥ स्वकीयापतिसौंपतिकहैपरना
 रीउपपति वैसकनायककीसदागनिकासौ
 हितरतिः ८ ॥ अथनयकनायक ॥ यदमिनि

नातैयहमतआपतैलीजैक्योनल ॥

चित्रनिसंघिनी विविधितायका नेदमें च्यार
जातितियजांनि १॥ अथ ताएकविंश
कीयाव्याहीनायकाः परकीयापरवांसः
सोसामान्यानायकाजाकौधनसौकाम
१०॥ अथ सुग्यामध्यायोता॥ विन जानें
अज्ञात हैः जानै जो वन शात सुग्याके द्वे
नेद एक विसवबरनत जात ११ मध्यासो
जामै होऊः लजामदतसमानः अतिषवी
न प्रौढाव है जाकौषियमै प्रांत १२॥ अथ
१३॥ अथ ताएकविंश कीयावचनमैं चाउरी यहै
विदग्धारीतिः वज्रतडरायैलंसधीलधी
लक्षिताधीति १३ गुपतारतिगोपितक
रौत्रिपतिनकुलटाआहि निहचै जानत
पियामिलनमुदिताकहियेताहि १४
विनसैगैरसहेटकीआगैहोइनहोइ
जाइसकीनसहेटमैंअनुसधानाहैसो
इ १५॥ अथ लक्षणावस्थानावस्थानिना
प्रोषितपतिकाविरहनी अतिरिसपति

सौहोऽ पुनियारुपेयताऽऽमः कलहं
तरितासोऽ १६ पति-आवेकजारेनवासि
ः प्रातर्धसितागेहः जातिमिलन-अनिस
रिकाः करिसिंगारसवदेह १७ पीयसहे
टपायोनहीं चिंतामनमें आनि सोचकरे
संतापसोउतकंवितावधानि १८ विह्व
पायेसंकेतपियः विप्रलवधतनाताय
वासकसजातनसजैपीयआवनजीय
थाय १९ जाकैपतिआधनीकहिस्चा
धीनपतिकाताहि जोरसुनैपीयकोगवन
प्रवत्स्यतिकाआहि २०॥ अथकोक्तिगर्वि
ता॥ अत्यसंभोग्यऽस्किता॥ सूर्ययेमअति
मानसौं उविधिगर्विताजानि अनिसंभोग
निडाखिताअनतमिलनपियमानि २१
अथधीरादिनेद॥ गोयकोयधीराकरैप्रग
टअस्मोधीराकोय लक्षनधीरअधीर
कौकोपप्रगटअसगोय २२॥ अथत्रिवि
धिमाना॥ सहजैहांसीषेलतैविनपवचन

उपजेरसको अनुभव होय ३७ आलंवन
अविलं विरस जा मैं रहें वना ५ नौलं रस
में संचरै ते विन चारी भा ३८ ॥ अथ वि
न चारी भा ॥ निर्वेद ग्लानि संकागरं वदि
ता मोह विवाद दे न्य असूया सुमित्र मदा
आलस सुमउन माद ३९ ब्रीडा जडता
हरष धृति मति आवेग वषां नि आकृति
गोपन चपलता अपसमार नय जानि ४०
उत कंठानि दासुयन कोध उग्रता भा ५
आधिविषादा वितर्क मिति एते ती सगता
५ ४१ ॥ अथ अलंकार लिख्यते ॥ अथ उ
पमा अलंकार ॥ इहि विधि सव समता
मिलै उपमा सोई जानि ससिसो उजल
तिय वदन यध्व वसे मृड्यानि ४२ ॥ अ
थ लुप्योपमा अलंकार ॥ वाचक धर्म स
वर्न निय हे चोये उपमांत इक विनु छै
विनु तीन विनु लुप्योपमा प्रमांत ४३ वि
जुरी सीपंकज मुषीकन कलता पितल धि

वनि तारससिं गारकी कारन मूरति ये वि
धधा अथ अनन्वय अथा उपमे ई उपमां न
जव कहत अनन्वय ताहि तेरे मुख की जो
र को तेरो ई मुख आहि धधा अथ उपमानो
पमेय अथा उपमां लागे परस परसो उपमा
नोय मेय धंजन है तुव नैन से तुव दृगं धंज
न सेय धधा अथ पंचविधि प्रतीया सो प्र
तीय उपमेय कौं कीजे जव उपमां न लोडन
से अंबुजवने मुख सो चंद वषा न ४७ उप
मे कौं उपमां न तें आदर जवे न होइ गरबु
करति मुख कौं कह चंद हिं नी कैं जोइ ४८
अन आदर उपमेय तें जव पावै उपमां न
तीछ न नैन कंटा छितै मंद कांम के वांन
४९ उपमे कौं उपमां न जव समता लाय
कनाहिं अति उन्नम दृगमी न से कहै कौं न
विधि जाहि ५० व्यर्थ होय उपमां न जव
वने नियल बिसार डिग आगे मृग कछु न
एयंच प्रतीय प्रकार ५१ अथ दोगवि

रूपकः है रूपकद्वेभांति कौमिलितद्रूप
 अनेद अधिक न्यून सम उक्तं न कैतीनेती
 न एनेद ५२ मुखससिवाससितै अधिक
 उदितजोतिदिनराति सागरतै उयजीन
 यहै कमला अपर सुहाति ५३ नैनक
 मल एअं नहै और कमल किहि कांम ग
 वन करति नां की लगति कनक लताय
 हवांम ५४ अतिसो नित विद्रुम अथर
 नहि समुद्र उतपन्न उव मुख पंकज वि
 मल अतिसरस सुवास प्रसन्न ५५ अ
 वधिरिणालंकारा करौ क्रिया उय मां
 न द्वै वर्णा तीय धरिणांम लोचन कंज वि
 शाल तै देषत देषो वाम ५६ अथ उक्तं
 पदोय भांति सो उध्वेष जु एक कौं वक्तु
 समुक्ते वक्तु रीति अर्थि नै मुरत रुतीय
 मद न अरि कौ काल प्रतीति ५७ वक्तु वि
 धि वर नै एक कौं वक्तु गुन सो उध्वेष मू
 रति अर्जुन तेजर विमुरु गुरु वचन वि

सेष ५७॥ अथ स्मरणालंकार भ्रमालंकार
संदेहालंकार॥ सुमिरन भ्रम संदेहाल
क्षितनांमप्रकास सुधि आवति वा वदनक
देखें सुधानिवास ५८ वदन सुधानिधिज
निये उवसंग फिरत चकोर वदन किधौय
हसीत कर किधौक मल जय नोर ६०॥ अ
थ सुधाधाय कृति अ०॥ धर्म डरें आरोप
तें सुख अय कृति जांनि उर परनां हि उरोज
एकन कलता फल मांनि ६२॥ अथ हेत
अय कृति०॥ वस्तु डरायें युक्त सौ हेत अय
कृति होय तीव्र चंन नरें नर विवड वानल
ही जोइ ६२॥ अथ पर्यस्ताय कृति॥ पर्य
स्त कुगुन एक कौ और विषे आरोप होय
सुधाधर नां हिय ह वदन सुधाधर उय ६३
॥ अथ भ्रांताय कृति॥ भ्रांति प कृति वचन
सौ भ्रम जव पर कौ जाय ताप कं प है ज्वर
न ही नां स विमदन सताय ६४॥ अथ द
काय कृति॥ छे काय कृति युक्ति करि

रसौ वातडराइ करत अधरक्षतपीयनहि
सषीसीतरितुवाइ ६५॥ अथ कैतवाप
कुति॥ कैतवाने कुति एक कौंमिसुकरि
वर्नत आन तीछन तीय कटा छिमिसुव
रषत मनमथवांन ६६॥ अथ विद्या
॥ उत्पेक्षा संभावना वस्तु हेतु फल लेखि
नैन मनौं अरि विंदहे सरस विसाल विसे
षि ६७ मनोचली आंगन कविन तातेरा
तेपाइ उवयद समता कौक वल जल मे
वतइ कनाइ ६८॥ अथ रूप काति शयो
क्ति॥ अतिसयोक्ति रूप क जहां के व
लही उपमांन कन कलता मरचंद मांध
रेधनुष कैवांन ६९॥ अथ अपकुरूप
काति शयोक्ति॥ अति निऋवगुंन और
कौ औरै परवहराइ सुधान स्यो यहवद
न उवचंदक हेवोराइ ७०॥ अथ निंदका
विशयोक्ति॥ अति शयोक्ति नेदक सबै
इहि विधि वरनत जात औरै हासि बोद

धिवौऔरैयाकीवात ७२॥ अथशंबंधाति
शयोक्ति॥ संबंधातिशयोक्तितवंदेतअ
जोगहिजोग यापुरकेमंदिरकहेससिलौ
ऊंचेलोग ७२ अतिसयोक्तिइजीवहैजो
गअजोगवषांनु तोकरआगैकलयतरु
क्योपावैसनमांनु ७३ अथक्रमानिशक्ति
अतिशयोक्तिआक्रमजवैकारनकारि
जसंग तोसरलागतसाथहीधनुषहिअ
रुअरिअंग ७४॥ अथचपलातिसयोक्ति
॥ चपलात्युक्तिजहेतकोहोतनमांहिक
जकंगनहीनईमूदरीपीयगवनसुनि
अज ७५॥ अथअत्यंततिशयोक्ति॥
अत्यंतातिशयोक्तिसोपूर्वापरिकमनां
हिबांननपऊंचेकांनलौअरिपहिलैगि
रिजांहि ७६॥ अथतुल्यजोगिताअ०॥
तीन॥ तुल्यजोगितातीनएलक्षितक्रम
तैजांनि एकसष्टमैहितअहितवऊमैए
कैवानि ७७ वऊसौसमतागुननिकरि

रहिविधिभिन्नप्रकार गुननिधिनीकेंदे
तसूतिपकौंअरिकौंहार ७८ भवलवधू
कीवदनउतिअरुसऊचतअरिविदं त
हीश्रीनिधिधर्मातिधिउहीइंदअरुचंद
७९॥अथदीपकअलंकार॥सोदीपकानि
जगुननिसों वएपइतरइकभाइ गजम
दसोंन्यपतेजसोंसोनालहतवनाइ ८०
अथतीनदीपकावृत्ति॥दीपकआवृत्ति
तीनविधिआवृत्तिपदकीहोइ पुनिहैआ
वृत्तिअर्थकीइजेंकहीयैसोइ ८१ प
दअरुअथउज्ज्वलकीआवृत्तिलीजि
लेषि घनवरदेहैरीसधीनिसिवरयैहे
दषि ८२ फलेब्रक्षकदंवकेकेतकवि
कसेआहि मत्रनयेहैमोरअरुचात
कमत्रसराहि ८३॥अथप्रतिवस्त्रूप
प्रतिवस्त्रूपमासोसमजिदो
ऊवाक्यसमान सोभासूरयतापवरसो
नासूरहिवांन ८४॥अथदिष्टांत॥

अलंकारदिष्टातसोलक्षितनामप्रमाणं
कालिमांनंसासिहीवव्योत्तहीकीरतिमां
न ८५ अथनिदर्शनंअ०तीन॥ कहिये
त्रिविधनिदर्शनावाक्यअर्थसमदोश
एकदीयेपुनिऔरगुनऔरवस्तुमैहोइ
८६ कहियेकारिजदेषिकछूनलौबुरो
फलभाव दातासौम्यसुअंकुविनुपूरन
चंदवभाव ८७ देखीसहजैधरतयेधंज
नलीलानैनः तेजस्वीसौनिवलवलम
हादेवअसुमैन ८८॥ अथव्यतिरेकअ
०॥ व्यतिरेकजुउपमानतैउपमैअधिके
देषि मुखहैंअंजुजसौसधीमीठीवातवि
सेषि ८९॥ अथसहोक्तिअ०॥ सोसहो
क्तिसवसाथहीवरनैरससरसाइकीर
तिअरिकुलसंगहीजलनिधियऊंवीजा
इ ९०॥ अथविनोक्तिअ०॥ हैविनोक्ति
देनांतिकीप्रस्तुतकव्युवितछीन असु
ताअधिकीलहैप्रस्तुतक

दृगध्वजनसेकंजसेअंजनविनसोत्तेन
लिसवगुनसरसातिहरंवरुषाईहै
२॥ अथपुनस्तोत्रिअथासमासोक्ति
स्तुतपुरैप्रस्तुतवर्ननमांजः कुमुदान
प्रफुलितनईदोषिकलानिधिसांज
॥ अथपरिकरअथाहैपरिकरआस
लियैजहांविशेषणहोहिः ससिवद
यहनायकातायहरतिहैजोहि एधः
अथपरिकरअथासाभिधायवि
षजवपरिकरअऊरनामः सूधैल
यकैकहैनैकुनमांनतिवांमं एप॥
यत्तेवर्त॥ श्लेषअलंकृतिअर्थव
एकशब्दमैहोतः होयनशूननेहवि
असौवदनउदोत ए६॥ अथप्रस्तुत
संसादोषाअलंकार॥ कैनीतिकेअप
तप्रसंस इकवरननप्रस्तुताविनाइजै
स्तुतअंसा ए७ धनियहचरचाज्ञान
मक्तलसमैसषट्तेतः विपराषतहैकै

सेव आयुधस्योऽहिंहेत एण॥ अथ प्रस
 तुतां ऊरुप्र॥ प्रस्तत अं ऊर है की ये प्रस्तु
 मै प्रस्तः कहा गयो अलि के वरे छा नि
 को मल जाइ एण॥ अथ प्रजायोक्तिपा॥
 र्या योक्ति प्रकीरदै क छु रचना सौ वात मि
 सु करि कारि ज साधियै जो है चित हि सु हा
 त १०० चतुरव है जिन उ व ग रै विन गुन
 तारी माल उ म दो उ वै ठौ व हो जात अ न्हा व
 न ताल १०१॥ अथ व्याजस्तु॥ व्याजस्तु
 ति निंदा मि सही ज वै व माई हो हिः सर ग
 व दाये पति त ले गंग कहा कहौ तो हि १०२
 ॥ अथ व्याज निंदा॥ व्याज निंद निंदा विषे
 निंदा औरे होइ सदा छीन की नौ न नू चंद
 मंद है सोइ १०३॥ अथ आच्छेप अणा ती
 न ती न जाति आच्छेप है एक निषेधा न सं
 पहिले कहियै आय क छु वं ऊरि फेरि
 तास १०४ दुरे निषेध जु वि
 छिन ती नौ लेषि हो नहि

यतनतायविसेषि १०५ सीतकिरनिदेदर
सत्र अथवातीयमुखआहि जाऊदई मो
जनमदैचलेदेसउमजाहि १०६ ॥ अथ
रोधाभास ॥ भासेसवैविरोधसौयहेवि
रोधाभासः उतरतहोउतरतनहीमनतै
प्राननिवास १०७ ॥ अथविनावनाअ
॥ होतिछनांतिविनावनाकारनविनही
काजः विनजावकदोतैचरनअरुनल
षेहैआज १०८ हेतअमूरततैजवेकारि
जपूरनहोइ ऊसमवांनकरगाहिमद
नसबजगजीत्योजोइ १०९ प्रतिबंध
ककेहोतलंकारिजपूरनमांनि निसि
द्विनस्तुतिसंगतितऊनैनरागकीषांनि
११० जवेअकारनवस्तुतैकारिजपर
मरहोत कोकिलकीवांनीअवेकोलत
सुन्योक्थोत १११ कालकारनतैजवे
कारिजहोहिविरुद्ध करतमोहिसंता
पयह सधीसीतकरमुख १२ पुनिक

कारिज तैज वै उपजै कारन रूप तेन
न ते दोषिय हसलिता वहति अनूप
॥३॥ अथ विशेषांति प्र० ॥ विसेयोति
हेतसौ कारिज उपजै नाहि नेह धरत
हि हेत ऊकांस दीपचितमाहि ॥४॥ अ
प्रसन्न व प्र० ॥ कहे प्रसन्न व होत जव
न सन्नावन काजः गिरवर धरि हे गोप
त क्यौं जौ नैय ह आज ॥५॥ अथ अं
ति प्र० तैत ॥ तीन असंगानिकाज अ
कारन न्यारे तौ म और तौ र ही की जी गे
वोर कौं कांस ॥६॥ और काज आरंभ
और करीये दोरि को डल म दसान न
मुं मत अं वावोति ॥७॥ तेरि पुर्क
ता तिल कल गायो पांति नोद सिद्ध
दिष्ट नोद कल गायो अति ॥८॥
विषय लंज व द विप्रसन्न व द
तं न विदित न सिद्ध न के मंगु काव
मै ये अं र क र क र क र क र

और न ले उद्दिम की ये होत बुरो फल आइ
 अतिको मलत न तीय को कहां काम की ला
 ५ १२० षडगलता अतिष्ठामें तैं उंय जी की
 रति सेत सखिला यो धन सार ये अधिकता
 पतन देत १२१ ॥ अथ मलकाता अलंका
 र समतीन विधियथा योग को संगः कारि जमे
 सब पाई ये कार नही के अंग १२२ स्वमविन
 कारि जा सिद्ध जब उद्दिम करतै होइ हार वास
 तीय उर कस्यो अयनै लाय क जोइ १२३
 नीच संग अचिर ज नही लछि मी जल जा आ
 हि जस ही को उद्दिम की यों नी के पायो ताहि
 २४ ॥ अथ विविचालंकार ॥ इच्छा फल विप
 रीतिकी जै जतन विचित्र नवला उन्नत
 लहन कौ जे हे पुरुष पावित्र १२५ अथ अ
 धिकालंकार दोइ अधिकार्द्र आधेय की
 जब आधार सों होइ जो आधार अधियतै
 अधिक अधिक ए दोइ १२६ सात दीपन
 वधं रुमें की रति नाहि समात सद्यसिंक के

तो जहां तु वगुन वरने जात १२७ ॥ अथ अ
न्यालंकार ॥ अलप अलप आधेय तै स्त
क्षि म होय प्रधारं अंगुरी की सुदरी ऊती
सुनु जमै करत विहार १२८ ॥ अथ अन्या
न्यालंकार ॥ अन्या न्यालंकार है अन्या अ
न्य उषकार सासि सौं नि सिनी की लगे नि
सही मै ससिसार १२९ ॥ अथ विशेष लं
कार ३ ॥ तीन प्रकार विशेष है अनाधार
आधेय थोरो कछु आरंभ जव अधिक
सिद्धि कौं देय १३० वस्तु एक को की जी
पै वने नुगेर अनेक न भऊ पर कंचन ल
ता ऊ सम सुख है एक १३१ कलय वृक्ष
दिष्यो मही तो कौं देषत नैन अंतर वाहि
रि दि सि वि दि सि व है तीय सुष दैन १३२
॥ अथ व्याघात अण ॥ व्याघात ज कछु औ
र तै की जै कारि ज और व ऊरि विरुधा तै
ज वै का ज ल्या ई ये दोर १३३ सुय पावत
जा सौं जगत ता सौं मारत मार

तबालतौकरतकाहियारिहार ३४ अथ
गुफालंकार कहीपैगुंफपरधराकार
नकीजबोहत नीतिहिधनतिहित्यागुपु
नितातैजसउद्योत ३५॥ अथ एकवलि
ग्रहितमुक्तयदरातिजवएकाव
लितवमांति दृगस्तुतिपरस्तुतिवाक्य
रवाक्यजंघलौजांति १३६॥ अथ एकवलि
दीयकएकावलिमिलैमालादी
पकनामः कामधांमतिरहीयनयौतीय
हीयकौनूधाम १३७॥ अथ एकवलि
काकतैसरसजवअलंकारयहसार
मधुसौमधुरीहेसुधाकवितामकरअपा
र १३८॥ अथ एकवलि यथासंध्य
वर्तनविधैवस्तनुक्रमसंग करिअरिमि
त्रविधैतिकौगंजनरंजनमंग १३९॥ अथ
द्वेपर्मायअनेककौक्रम
सौआश्रयएक फिरिक्रमतैजवएककौ
क्रमसौआश्रयधरैअनेक १४० ऊती

रलताचरनमें नई मंदता आइ अंबुज
जिति थवदन डति चंद ही रही वनाइ १४१
अथ परि वृत्त अं०॥ परिव्रतलीजि अधिक
नवथोरोई कछु देइ अरि इंद्रि कटाहि
एह एक वां नवर लेइ ४२॥ अथ परि संख
अं०॥ परिसंख्याइ कथल वर निहू जो थल
हराइ नेह हां निहीय मैं नही नई दीप मै
ताइ १४३॥ अथ विकल्प अं०॥ हे विकल्प
एह कैव हेइ हिं विधि को वृतांत करि हेइ
मैं कौं अंत अब जम कै प्यारो कंत १४४ अ
थ समुच्चय अं० दोय समुच्चय नाव वड
कैंडं इक उय जै संग एक काज चाहै कस्यो
कौ अनेक इकरंग १४५ अब अरि नाजत
गिरत फिरि नाजत है सतराइ जुवन विद्या
मदन धन मद उष जावत आइ १४६ अ
थ कारक दीपक अं०॥ कारक दीपक एक
मैं क्रम तै जाव अनेक जां निचितै आवति
हसति पूछति वात विवेक १४

सोसमाधिकारिजसुगमश्रे
रहेतमिलिहोत उतकंठातीयकौनईअ
थयौदितउद्योत १४८ ॥ अथवा ॥ अथवा ॥
कावार्थायिनकौसवैशहिंविधिवरन
तजात मुखजीत्यौवाचंदसौकाहकम
लकीवात १४९ ॥ अथवा ॥ अथवा ॥
काव्यलिंगजवजुक्तिसौअर्थसमर्थ
नहोइ तोकौमैजीत्यौमदनमोहीयमै
सिवसोइ १५० ॥ अथवा ॥ अथवा ॥
मान्यतौविशेषदृढतवअर्थोतरन्यास
रघुवरकैवरुगिरितैरेवमेकरैनकहाय
१५१ ॥ अथवा ॥ अथवा ॥ अथवा ॥
तविशेषजवफिरिसामान्यविशेष ह
रिगिरिधास्योसतपुरिषतारसहेज्यो
सेष १५२ ॥ अथवा ॥ अथवा ॥ अथवा ॥
तिवर्तनविषेअधिकार्इअधिकार के
सअभावसरैनधनसधनतिमरकेतार
१५३ ॥ अथवा ॥ अथवा ॥ अथवा ॥

कहे संभावना विचार वकता होते से धतो
लहतो तो गुन पार १५४॥ अथ मिथ्या धि
वसति॥ मिथ्या धि वसिति कहत है अलं
कार इहि रीति कर में पार दजोर है करे न
वागधीति १५५॥ अथ ललित अथाल
लित कह्यो कछु चाहिये ताही को प्रति वि
व सेतवां धि वरि है कहा अतः उत्तर अ
वु १५६॥ अथ प्रहर्षन अथ तीन प्रहर्षन
जतन विन वंछित फल जो होइ वंछित
स्तै अधिक फल श्रम विन कहिये सोइ
१५७ सोधन जाके जतन को वस्तु चढे क
र सोइ जाको चित चाहत वक्तो आई इ
ती होइ १५८ दीपक को आदि मकीयो तोलै
उद्योगांत निधि अंजन की ओषधी सो
धन लह्यो निदान १५९॥ अथ विषाद अ
थ सो विषाद चित चाहतै उलटो कछु के
जाइ नीवी परसत श्रुति परी चरना युध
धुनि आई १६०॥ अथ उध्या

गुनजवाकतै और धरै उधवास न्हाइसं
 पावन करै गंग धरै यह आस १६१
 होत अवज्ञा और केन लगे
 न अरु दोस पर सुधा कर किरनितैष
 नेत पंकज कोस १६२
 होत अनुग्या दोष कौं जौली जै गुन मां
 नें होऊ विपति जामे सदा ही ये चरत हरि
 आनि १६३
 गुन में दोष
 त दोष में गुन कल्प नो सुलेष शुक यह म
 धुरी वानितै वंधन सह्यो विसेष १६४
 मुद्रा प्रस्तुत पद विषो और
 अरथ प्रकास अली जाइ किन पीउत
 हि जहां रसीली वास १६५
 रत्नावलि प्रस्तुत अरथ क्रमा
 तै और कुनांम रसिव चतुर मुख नृमिय
 तिस कलग्यां न को धाम १६६
 तद गुन तजि गुन आपनो सं
 गतिको गुन लेइ वेसरि मोती अधर मि

लिपदमरागच्छविदेइ १६७॥ अथ समाधि
अण॥ सो समाधिकारिज सुगम और हेतमि
लिहोत उत कंठातीय कौं नई अथ यो दिन
उहोत १६८॥ अथ काव्याध्यायति॥ काव्य
र्यापित कौं सवैइ हिं विधि वरत जात मुख
जीत्यौ वाचंदसौ कहा कमल की वात १६९
॥ अथ काव्यलिंगलं॥ काव्यलिंग जब
जुक्ति सौं अर्थ समर्थ न होइ तो कौं मै जीत्यौ
मदन मोहीय मै सिव सोइ १७० अथ अ
र्थांतर न्यास सामान्य ते विंशेष्ट तब
अर्थांतर न्यास रघुवर कै वरुगिरित रेव
ने करै न कहा स॥ १६७॥ अथ पूरवरूप
॥ पूर्व रूप लै संग गुन तजियुनि अय नौ ले
त इजै जव गुन नां मिटे कीयै मिटन के हे
त १६८ सेष स्यां महौ गिव गरै जस तैं उज्ज
ल होतः दीपमि टायै लं कीयौ रसनाम नि
उहोतः १६९॥ अथ अतनु तं अण॥ सुअ
तनुन संगति नयौ जव गुन लागत

ओगुनजवाकतैऔरधरैउधवास न्हाइसं
 नपावनकरैगंगधरैयहआस १६१
 होतअवज्ञाऔरकेनलगे
 गुनअरुदोस परसुधाकरकिरनितैयु
 लेनपंकजकोस १६२
 होतअनुग्यादोषकोंजौलीजैगुनमां
 निं होऊविपतिजामेसदाहीयैचरतहरि
 आनि १६३
 गुनमेंदोष
 रुदोषमेंगुनकल्पनोमुलेष शुकयहम
 धुरीवानितैबंधनसहोविसेष १६४
 मुद्रायस्तुतपदविषोऔरै
 अरथप्रकास अलीजाइकिनपीउत
 हिंजहांरसीलीवास १६५
 रत्नावलिप्रस्तुतअरथक्रमा
 तैऔरऊनांम रसिवचत्ररमुखनूमिय
 तिसकलग्यांनकौधाम १६६
 तदगुनतजिगुनआपनोसं
 गतिकौगुनलेइ वेसरिमोतीअधरमि

लिपदमरागच्छविदेइ १६७॥ अथ सगति
 अण॥ सोसमाधिकारिजसुगमत्रौरहेतमि
 लिहोत उतकंठातीयकौनईअथयौदिन
 उहोत १६८॥ अथकाव्याध्यात्यति॥ काव्या
 र्थपितकौसवेइहिंविधिवरतजात मुख
 जीत्यौवाचंदसौकहाकमलकीवात १४२
 ॥ अथकाव्यलिंगालं॥ काव्यलिंगजव
 जुक्तिसौअर्थसमर्थनहोइ तोकौमैंजीत्य
 मदनमोहीयमेंसिवसोइ १५० अथअ
 र्थांतरन्यास सामान्यतेविशेषदृढतब
 अर्थांतरन्यास रघुवरकैवरुगिरितरेव
 मेकरैनकहास॥ १६७॥ अथपूरवरूप
 ॥ पूरवरूपलैसंगगुनतजियुनिअपनौले
 त इजैजवगुननांमिटैकीयैमिटनकेहे
 त १६८ सेषस्यामहो॥ शिवगरैजसतैंउज्ज
 लहोतः दीपमितयैलंकीयौरसनामनि
 उहोतः १६९॥ अथअतकुल
 तऊनसंगतिनयौजवगुन

पीयअनुरणीनां नयैवसिरागीमनमां हि
१७० ॥ अनुगुनसंग
तितैजवैपूरवगुनसरसाइ मुक्तमालही
यहास्यतैअधिकसेतकैजाइ १७१ ॥
अनुगुनसंगतितैजवै
पूरवगुनसरसाइ मुक्तमालहीयहास्य
तैअधिकसेतकैजाइ १७२ ॥
मीलितसौसाइस्यतैनेदजवैन
लषाइ अरुनवरनतीयचरनपरजाव
कलह्योनजाइ १७३ ॥
सामान्यजुसाइस्यतैजांनियरैनविसेष
तां हिफरकश्रुतिकमलतैतियलोयन
अनिमेष १७४ ॥
मीलितसाइस्यतैनेदफुरैतवषांमांनि
कीरतिआगैउहिनगिरिछुवैयरतहेज
नि १७५ ॥
विसेषयुंनिफुरैजुसमतामांऊ तीयमुष
अरुषंकजलषेससिदरसनतैसांऊ ७५

॥ अथ गुंछोत्तर अ० ॥ गुंछोत्तर कछु नाव
तें उत्तर दी नें होत उन वेत सत स मै पाथिक
उत्तर न लाइ क सोत १७६ अथ चित्रालं
चित्र प्रस्तुत उत्तर ड ऊ एक वचन मै सोई सु
गधातिय की केलि रुचि गोह कौ न मै होइ
१७७ ॥ अथ सूक्ष्मालं ॥ सूक्ष्म पर आ
सैल घे सै न नि मै कछु नाइ मै देघ्यो उहि स
समनिके सनिल यो छिपाइ १७८ ॥ अथ
पिहितालंकार ॥ पिहित छिपी परवात को
जाति दिषावै नाइ यात हि आये से ज पिय
ह सिदावत तिय पाइ १७९ ॥ अथ व्याजो
क्ति अ० ॥ व्यजो कति कछु और विधिके
डरै आकार सधिसुक की नै कर्म ए मां नि
क जां नि अतार १८० ॥ अथ गुंछोत्तर अ०
॥ गुंछो कति मि सु और कै की जै पर उप देस
कालि सधी लं जां उगी पूजन देव महेस
८१ ॥ अथ विद्युत् कति अ० ॥ श्लेष क्रिया
गढ की ये विबुतो क रिति है अैन प्रकृत देव

महसकौ कहत दिषाये सैन १८२ ॥ अथ कौ

॥ स्लेष छिप्यो परगटकी ये विप्र तो कहि
तिहे अने हे जु जुक्ति की नो क्रिया मर्म छि
पायो जाई पीव चलत आसू चलै पों छ
ति नैन जं जाइ १८३ ॥ अथ कौ

॥ लोकौ कति कछु वचन जाली नै लोक
प्रवाद नैन मूदी षट मास लौ सहिये वि
रह विषाद १८४ ॥ अथ कौ ॥ लो
कौ कति कछु अर्थ सौ सो छे कौ कति मा
नि जोगाइन कौ फेरि हो ताहि धनं जय
जांनि १८५ ॥ अथ कौ ॥ वक्रो
क्ति स्वर स्लेष सौ अर्थ फेरि जो होइ रसि
क प्रपूरव होयीया बुरौ कहत नही कोइ
१८६ ॥ अथ कौ ॥ स्वभावो
क्ति यह जांनि लै वर्नत जाति सुनाइ हसि
हसि दषति फिरि रुकति मुह मोरति इत
राइ १८७ ॥ अथ कौ ॥ नाविक न
त न विषय जो परत बिहोयवनाइ वंदाव १८८

नमै आजवहलीला देखी जाय १८८॥ अथ
उदात्त अ०॥ उपलक्षित नदै सोधीयौ अधिक
री सुउदात्तः तुम वा के वसि होत हो सुनैत न
कसी वात १८९॥ अथ अत्युक्ति अ०॥ अलं
कार अत्युक्ति यह वरन न अतिसय रूप
जा ककते छे दांत तो न एक लपत रु नूय १
९०॥ अथ ऐ नै रुक्ति अ०॥ सो निसुक्ति जव जे
गतै अथ कल्या ना अंन ऊधो ऊव जा वसि
न यो निरगुन वहै निदांन १९१ अथ प्रति
षेध अ० सो प्रतिषेध प्रसिद्ध जो अर्थ निषेध
जाइ मोहन कर मुरली न ही कछुइ कवन
बलाइ १९२॥ अथ विधि अ०॥ अलंकार
विधि सिद्ध जो अर्थ साधिये फेर को किल
है को किल जवे रिउ मै करि है टैर १९३
॥ अथ हेतु अ०॥ हेतु अलं कृत दोइ जव का
रन कारिज संग कारिज कारन ए जवे वस्तु
एक ही अंग १९४ उदित तयो ससि मांनि
नी मांन मिटावन मांनि मरै रिद्धि समाधि

यह तेरी कृपा वसोति १९५ ॥ अति ॥
लाला लाला तु प्रास जव पदकी ॥ आवत वर
अनेक की दोइ दोइ जव होइ है छका तु प्रा
सुख समता वितल सोइ १९६ ॥ अज नला
है अंधर प्यारे नैती पीक मुकत माल अय
प्रगट कवित हीये पसीक १९७ ॥ अंधर
लाला लाला तु प्रास जव पदकी ॥
वृत्ति होइ शब्द अर्थ के ते दसौ ते दविता
सोइ १९८ ॥ पीयनिक टजा कै नही घा
चांदिनी ताहि पीरनिक टजा कै सभी घा
चांदिनी आहि १९९ ॥ अंधर लाला लाला
मक शब्द को फिर आवत अर्थ जु देसौ ज
सीतल चंदन चंदन हि अधिक अगनि
मांति २०० ॥ अंधर लाला लाला लाला
प्रति अक्षर आवति वक्त वृत्ति तीना विधि
नि मधुर वचन जा मै सवै उपनागारिका
नि २०१ ॥ इजै पसवा कहत सव जा मै व
समास वित समासादिन मधुरता कहै

मलातास २०२ अतिकारी नारी घटाया
रीवारी वेसः पीय परदेस अंदेस यह आव
त तां हि संदेस २०३ को किल चाति कन
ग कुल के की कवि न च कोर सोर सु नैं धर
क्यो ही यो का म कटक अति जोर २०४ घ
न वर सत दां मि निल सै दस दि सि नी र त रं
ग दं य ति ही यें कु ला स सौं अति सर सा त अ
नंग २०५ ॥ इति अर्थ लंकार शृङ्खलंकार
जाता ॥ अलंकार सव अर्थ के कहै एक सौ
साठ करे प्रगट भाषा विषे देखि संसृत पा
ठ २०६ शृङ्खलं कृत वक्रत है अक्षर कै सं
जोग अनुप्रास घट विधि कहै जे है भाषा जो
ग २०७ ता ही नर के हेत यह की नौ ग्रंथ न
वीन जो पंक्ति भाषा निपुन कविता विषे प्र
वीन २०८ लक्ष्मन तीय असु पुरुष के हा
वता वर सधांमः अलंकार संजोग ते भाषा
भूषन नाम २०९ भाषा भूषन ग्रंथ कौ जे
देखित लाइ विविधि अर्थ आहित्य रस

समुकैसवेवना ५ २१० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
मन्त्रप्रयोगसंस्कारः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ अथ गणेशाय नमः ॥ अथ गणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ तं नमामि यदपरमगुरुकृष्ण
कमलदलनेन जगकारणकरुणारुन
गोकुलजाकोऽयं १ नावगुनभेदसर्व
प्रगटतसर्वहीनो ताविनतंतजुऽयं न
कष्टुकहैसुकविवमवोर २ उच्चरिसक
तनसंस्कृतजान्यो चाहतनांम जिनिहि
तकीनीनंदजथारचतनांम कीदांम ३
मुथननानानामकी अमरकोककैजा
प्रमानवतीकेमानपरमिले अरथसर्व
आयं ४ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अहंकारमददर
पुनिगरवसमें अजिमान मानराधि
कारवनकोसर्वकोकरतकल्याण ५
वशसासघ्रीचीसघ्रीहितसह
चरीआहि अलीकुंवरिनंदलालकीवली २६

मनावतताहि ६ बुद्धिनाम धुबुद्धिर्मन
षासेसषीमेधीधिषणधीय मतिमामता
जुकरिचलीमलीचिचछनतीय ७ वाणी
नाम वाणीवाकसरस्वती ८ छीला मारद
नाम चलीमनावतभारतीवचनचानुरी
काम ९ ॥ १० ॥ पलनामा ॥ असुतरससहिम
ऊटिलतुरतंतफणद्रुतहो ५ विरसत्वरत
रविप्रभं अरुलधुरदं रंधिसुसो ५ ए वाज
वेगही जवरं नसरनं अविलंबतउनाल व
पलचलीचातुरअलीआतुरदियिनंदना
ल २० ॥ २१ ॥ मनाता ॥ सदनमदमआगार
हृग्रहवेसमसंकेत लडनायेअप्रदअम्व
पदअलेनिलयतिकेत १२ मंदिरमंदप
आयतनवसतनिकायमथांत नवतन
पवधनांनकेचलीमहचरीजांत १३ के
तलं १४ केचनअमृतकैरिजिभरहेन
हिरण्योवरत अण्णदहदकधुरदुध
तकेनहोरवरत १५ ॥ १६ ॥ न

हरिचाप्रीकरतपनीयः रुकमरुड्यरोदन
कनकमहारजतरमनीय १३ जावुनदकी
नीतअरुमाणिकगचसचदेत जहोतहां
नरनारिसवमांडकुकिगुकिलेत १४ रुक
मरचितडूवरणपुनिजातरूपपरजूररु
पेकीगउसारजहांनवनभूपतेदूर १५
मुपेदनाम सुकलसुन्नयांमुरविसदअ
जुनस्वितउदात धवलनवलउवेअयक
रतघटासावात १६ सोनानांम नाआ
नासोनाप्रनासुधमांपरमांकांति छवि
नकहीपरैनवनकीसुरमूलततिहिंभा
ति १७ किरणनाम अस्त्रगनस्तिमयू
षाघ्नोणिगोमरीचवसजोतिरसमपरस
मसिस्तरकीजगमगजगमगहोत १८
मोरनांम नीलकंठकेकीवरहिस्थषी
सिधंभीहोय मयूरकलापीअहिनवीसि
वसुतवांहनसोय १९ नाचतमोरअ
रांनचदिअतिहीनरेआनंद छिनही

मो

छिनऊनैरहेनवनीरदनंदनंद २० सिं
धनांमं कंठीरवहरिकेहरीपुंडरीकह
रिजक्ष मृगपतिर्षीवाधपुनियंवाधन
पलनक्ष २१ सिंधपौरिव्रषनांनकीस
हचरिपोहचीजाय अतिसंघटनटनट
नकौगढीनईलजाय २२ अस्वनांम
वाजिवाहसिंधवतुरगअरुतुरंगकेका
न घोरेकीअतिनीरजहांनैकनयइये
जानं २३ हस्तीनाम हस्तीदंतीधरिदि
पुपझीवारनव्याल इनऊंतीऊंजरक
रीतंवेरमसुंमाल २४ सिंधुरअनेकय
नागहरिगजसामदमात्तंग इतगयंदधू
मतघरेराजतनानारंग २५ अष्टसिंध
नांम अणिमामहिमागारिमालधिमा
प्राप्तिकामवसीकरणअरुईसताएअ
ष्टसिद्धकेनांम २६ अष्टसिद्धिक
ष्टकारिसिद्धिजुलहतसंसार तेव्रषनां
ननुवालकैधारबुहारनहार २७ नव

निधिनाम महापद्मअरुपद्मयुनिकछ
यमकरमुहियेककुंद संघषरवअ
रुनीलइकअरुकहियेइककुंद २८ ए
नवनिधिजुजगतमैकारुकेविलेदीध २
तेब्रषभानकेमारिकैदीपद्मजैशैके
परतनिधारननीध २९ मोघनाम मो
घअमृतकइवलयुनिअपनरनवअ
पवर्ग न्यअइरणतिरवाणपदमहासि
धिवरसी ३० मुक्तिजुच्चार्यकारकी
नहियइयतुविनजोग तेब्रषभानकीपो
इमैपावतपांवरलोग ३१ राजानांम
रुपनदिंदइसानइनअधियमहीपति
रूप राजाजहब्रषभानकीवनिवे
सभाअनूप ३२ इइनांम सकसत
कतुसविपतीसकंदनपुरलत कौसि
कवांवित्रलमघवामातिलसूत
३३ जिसनपुरंदरवज्रधरतुरैल
पुयाक सोहेतहांब्रषभानवलिको

आधमल

१८

हेइंद्रवराक ३४ देवनाम देवअमरनि
 जरिविबुधसुरसुप्तनयतत्रिदेवेस वंदा
 एकाविमानगतिअग्निजेकैअमृतेस ३५
 दिवषडुलेषावहे मुषगीरवांणअतिओ
 प कवतदेवतारंकजहांवनिवैरेवालि
 गोप ३६ अमृतनांम सोमसुधापीधुष
 अमृतअगदराजसुरभोगअमीजहां
 कांहरकथा म्भतरहेतह्वलोके ३७ स
 सेवकेना० विधकरकिंकरकरमकरअ
 नुचरअनुगपदाति अतिरहितजहांमै
 नसेछविनीवनीनहिजाति ३८ अंत
 हकरणनांम संतडिदेमनमथपिती
 आंतममानसनांवः मनमनसोचैसह
 चरी नीतरिकिसविधिजांव ३९ काज
 लनांम काजलगजपाटलमषीनागदी
 पसुतसोय लुकअंजनडगदेचलीतोहि
 नदेषैकोय ४० दासीनांमः नृत्यादासी
 किंकरीचरीनरैजुअंनराजितमणिम

पुनि

मंगलसेवां उदिन
धरेजुदीपक लाज॥

यअजिरजहांको उरवसी कोरन ४१ हा
नाम निष्कपदि कंबजसोही रादिये
अन सऊचीते नतन देखि कै अयन व
के नैन ४२ मंगलनाम कुजअंगारक
मपुनिलोहितांगमहिवाल

~~नाम उष्मा नागवकाविकविअसुपुरो~~

नाम उष्मा नागवकाविकविअसुपुरो
तनाम बनेजुगमोती नवनमानां शुक्रक
दाम ४४ गुरुनाम धिषणसिषमी

~~नाम उष्मा नागवकाविकविअसुपुरो~~

नाम उष्मा नागवकाविकविअसुपुरो ४५ मुकतानांम

ससिगोती मोती गुलिक जलजसीपसुत

नाम मुकताबंद नमालइमविहसे सुंदर

धाम ४६ लिछमीनाम श्रीपदमापदम

लयाकमलाचपलाहोइ सिंधुसुतामाइ

दराविशुवधनासोइ ४७ जाकीनेकक

टाछिछ विरहीसवैजगछाइ सोलिछमी

अथनांतके आयवसीहै आई ४८ माता

नाम अंवासवत्री प्रसूजन इत्री मां नाम ज
ननी राधा कुंवर की वैठी मं मण धाम ४९
नमस्कार नाम वंदन अति वादन प्रणित न
मस्कार करिता हि सकुची गई आगे चली
जहा ऊं वरि वरि आहे ५० सीटी नाम आरो
हत आरोह युति न श्रेष्ठ सोपांत मणि मय
सीटी चढि सखी लषी न का रु आन ५१ पुत्री
नाम पुत्री उही ता कन्य का तनु पातनु जा हो
य सुता जहा वष नांत की गई सह चरी सोय
५२ सज्या नाम कंय पुतली सज्या सयन स
वैसन सयनीय ५३ दुग्ध केतु सम जहां
वैठी रमनीय ५४ फल नाम सुमन मुकुस
म प्रसून पुनि पुहय फूल पित कंद फल वि
तां न सुवनिर ह्यो जनु चैषूंदो चंद ५४
उसी सनां म उप बंदी न उप वरि हि पुति क
डक सो उच्छीर के सम उसी सा सुन्दरी
वैठी मां न सरीर ५५ मुख नाम आनन्द
सिलपने वदन वक्रतुं मुख विनै

षीकैजातइमजिमदरूपनमुपौन ५६
केसनांम केससिरोरुहाचिकुरैकचकुंत
लवालविसालविथुरेसुथरेअलकज
नुमनसिजचंवररसाल ५७॥लिलाट
नामा॥भालअलककुलिलाटमाधेबैदीव
नीजराइ मनूनागमणिनांमकेवाहिरपग
यी आय ५८॥वक्तनामा॥वांमअसितकुंचि
तऊटिलटेटीनोहनिबौर मनोधातजलजा
तपरपंपसंधारतभौर ५९ करणनांम अ
तिश्रवश्रवणसवदग्रहीकांनधुनीछवि
नीरजनुंविबरैकंवलकीनीफुलीनस
सिमुषतीर ६०॥लपनामा॥हस्तवाहमुष
पांनिपुनिकरपरधरैकपोल वरअरिबि
दविछायजनुसोवतंडअलोल ६१॥ल
भुनीनामा॥लोचनअंवकचछुपुनिनेत्ररु
पआधीन दिगारिसरातेवपलजनुजावक
नीनीमीन ६२॥वंसीनामा॥वमसिकुवें
नीमीनमाहामछाध्यानीनामं वेसरसो

अटकीजुलटमांनकुवनसीकांम ६३ अ
धरनांम ओष्टववणपुनिरदछदनअधर
मधुरइहिनाई लिषतलेषकेहाथकीकि
लकईषकेजाइ ६४ दांतनांमदसनदांत
डजरदनरदइमदमकतरंगभीज ओपति
मांतौकमलमैंसीतलविज्वलीबीज ६५
स्यामनाम॥स्यामनीलमेचकअसितचिबुक
विंदछविअंतमनूरसीलेअंवकीमुखपरमृ
दीमेंन ६६॥उरजनाम॥उरजययोधरकुच
सथनउरमंमणछविऐव कंचनसंयुटमें
नजनपूजिजुयाएदेवें ६७आलोगनामः॥
राजीअवलीआलतितरोमयंतिइहिनाइ
मांनौउततैमलमलैवरवैनीकीगाइ ६८
छुडधंटिकानांम रसनाकांचीकिकनीछु
इमेषलाजाल छुडावलिमनसैनैरवै
धीवंदनमाल ६९॥नशासनाम॥उपासंग
तुणीरपुनिइषधीधनयनीषंग जातमिनइम
नमथकौपिंमुरीनरीजुरंग ७०॥नूपरना

न॥ पादो गदयदधूधराञ्जलाकोटिमंजीर नू
परमनोमनमध्यकौजलैकतकरतअधीर
७१ वसंतरनाम बोलनिबोल डुकूलपट
अंबरवासनधीर लीलवसनमैदीपजन
दमकतगौरसरीर ७२ तंबुलीनाम तंबू
लीअहिवध्वरीद्विजमुषमंरुनमान नहि
तथातअनथातअतिरही जुनोरिमनमान
७३ ॥ जलनाम ॥ प्रतिविंबीआदरसपुनि
मुकरमुकरतैलेह नैननमैपियफलक
ऊषिनारिभारिपुनिदेह ७४ वीणानाम
तंत्रीवीणावालुकीवज्ररिविपंचीआहि
जंत्रवजावतसहचरीअनघतितिनतन
चाहि ७५ शुकनाम करतबिंदुमुककी
रपुनिसूवायदतपियनाम तिहजहराइ
हराइहसिदेतदारिमीनाम ७६ गुपतना
म गुपततिरोहतअंतरितगूलसुसुहिन
लीय लुकअंजनमैलुकिसषीदेषीइह
विधितीय ७७ जलनाम अंबुकमलकी

लालजलयद्रु^सकरबनवार अमृतअंर
ए^सवननवनधनरसवसपापार ७८ मे
धपहुयव्यषसर्वमुषपंककबंधरसतोय
उदकपातसंवरसलिलअपक्रपीटपुनि
सोय ७९ पांतीनेनपषारिकैअंजनहां
तोकीय प्रगटनईपियकासषीनिपटस
संकितहोय ८० जयनांम मरअस्वकैआ
त्वंकनयनीम^सवद्विजैत्रास मरतमरत ८१
सोसहचरीगईकुंवरकैयास ८२ चरणना
मचरणचलतगतिवंतपुनिआधपाद
पदपायपगवंदनकरिकुंवरिकौवैठी
सनमुषजाय ८३ हरिजनांम पीतांगो
वसकांचनीरजनीफोमानांम चूनांमि
लिजवहरदरंगईमदेवतनयनांम ८४
क्रोधनांम कोयक्रोधआमरषहरोष
मनीतिमहोइ केमनरीसुनिमुंदरीमरी
सहचरीसोइ ८५ समयनांम सामयस
मयअनीधवयवेअनमिषकाल व

मीवरसषीतनचितैश्चकवोलीवाल ८५
 कुसलनांम धेमअनाम नजनव सिव य
 सुमकल्यांन कितमोलतकछुकुसल
 हैप्रच्छतिकुवरिसुजान ८६ प्रतिउत्तर
 सषी संग्याआकैगोत्रपुनिधेमधामत्व
 ईनांम अमीवरसईहे तेसवपूरन
 कांम ८७ स्त्रीनांम स्त्रीनारीवानिताव
 धूललनांमुवतीनांम अवलावालाअ
 गनाप्रमुदाकांताबांम ८८ तरुलीरम
 सुंदरी सोवतीनिजसोय।त्रियतोसी
 त्रिऊलोकमैरंछीविरंछिनकोय ८९ व
 ह्यानांम पितास्ययंभूआतमभूधातास
 तधृतहोय विदुराचिवलविबलदुहि
 राचपुरजनननुनिमोय ९० वेधाकमल
 जलजलजलपरमेलीजगमांज जिहि
 विधिकैविधितुव सोविधिभईदल
 मां ९१ पंभवनांम धरमतातसुअजा
 नरियुकुंतेईस्करराइ निरपंजुधिहरस २२
 पुष्क ति

मकुंवरितेरैसौ^{ति}आभाद्र ए२ दीरघनाम
प्रथुलप्रांसुरिसाहविष्णुआयनरुद्रविसा
ल दीरघस्वासजुनरतवलिसोकारनक
हिवाल ए३ अरिजुक्कनाम जिषधन
जयविजयपुनिफालगुणाकिंरसंक गु
माकेसगांजीवधरनरवीनत्सअष्टक २४
पारथकविदिजस्वेतहैमाधिमपंनवनाम
अरिजनज्योधनधरअवधिषेमलछितं
नाम ए५ गंगानाम विष्णुपदीनिरजुरने
दीनिगमगदीहरिरूप सिंधूनंदीमंदोका
नीनागीरथीअनूप ए६ गंगाजिमयाज
गतमैयापहारिसुनकारि तिमितवकीर
तिसभकुंवारिकियेपुनीतनरहोरि ए७
सरीरनाम कायकलेवरकुणायवपुःदे
हआतमाअंग विग्रहउपधनसंहतनध
मसरीरपतंग ए८ तवतनसमोरिकिर
णहितकनकअगतिऊर्ध्वत कोमलस
रससुगंधनहिकोकविउपमांदेत २२

कमलनाम पुंडरीकं पुष्करकमलजल
 जग्रं वज्रं जग्रं नोज पंकजसारसतां मरस
 ऊवलयकंजसरोज १०० उत्पलयुनि
 अरिबिंदहरिपद्मविपितानां व क्यौ वि
 मुषनलिनं मलिनकच्छुदेवतहो वलि
 जांव १०१ चंद्रमानाम इंदुसुधानिधि
 कलादिप्रियं ब्रह्माजीवहि मरोम ससि
 धरहिमकरनिसाकर उषधीसरोसिसि
 सोम १०२ ऊं मदबंधुश्रीबंधपुनिरोहि लेय
 एवमुपदुःखं ऊं मराजडजराजपुनि लेय
 सेहिल्लुचमुषीपुनी मृगां का आत्रीय
 १०३ चंद्रकलाजिमचंद्रतैरंहतनना
 रीहोय इमअवलोकतवाल उचकहि
 वलिकारनसोय १०४ कामनांम मद
 नमनो नवयं यसरकुसुमसुखसुखसुख
 वकीतकेतकंदयपुनि दर्पकअतिमु
 कवार १०५ मनमथमनमिजआति
 मर संवरदत्तनअनंग पुनचायहरि २३

छेछतादितस्त्वहनवरं १०६ काम
अनन्यमकरादितमहिंविच्यविमोहनना
व पतिसौरतिजिमरुतिराहिकहाकहांव
लिजांव १०७ मेघनाम धाराधरजलध
रजलदजगजीवनजीमूत अन्नवलाह
कमुदिरहरिकांमर्कधूमसूयुत १०८
धीरदनीरदअंववहंवारिदजलमुकना
व घनविच्छटीविजुरीमनौइमदेवतव
लिजांव १०९ विजुरीनांम छणकविच्छ
टाअकाकीतडितचंचलाहोई दामिनि
विनधननहींवनैधनविनधनसोई ११०
सेनानांम प्रत्यनाध्वजनीवांहतीचमूं
विरुथीअंन सेनाविनात्रिपतिनावनैनि
पविनवनैनसेन १११ धनकनांम धन
कोइनाहिअपुनिकामकरियुसंता
प चापविनातहिअणि ११२ नमरनांम मधुकरम
धुलीमधुपअलिअलिनस्पली ३

बंधरी करे लंब व पुनिकी लाल घसारांग
 ११३ षट्पद इंद्री नमर पुनिकी लाल द
 रे फरस वोर आयवाल उवमाल नी
 लाल लाल की नोर ११४ धीतमनांम सु
 क्रदमित्र वधन सषाद इत अष्टपियपां
 न हरिसे धीतमसे कुंवरिन मरि अकार
 यमान ११५ पुत्रनांम आतम अमुन
 ति धुनित नुजत न्धयतातः नंदके नंद
 गोविंद सौ न कर गरव की वात ११६ मान
 वनांम मान वमृत्यु मनुष्य नरमानं मनु
 जयमान नर जेति जानहि नंदको नट व
 र पुरष पुरांन ११७ वेदनांम आमनाय
 श्रुति ब्रह्म दुमधर ममूल सवकांम नि
 गम अगम जाको कहत सो वै सुंदर स्याम
 ११८ रिषनांम रिषि निष्ठ कताय सजती
 व्रती साध मुति आहि जोगी जन मन विम
 ल कर जो जत षो जत ताहि ११९ धरमनां
 म वेव सुता नर रुधरिये त्रिपती विसुता

नी

सुवन
त्रसु

ज

२४

सोयः संजम्यतीति महिषधुजसमवती
पुनिसोय १२० जमनांम अंतककालक
तांतं जमजगजातैरुपयंत सेवतपिय
भूतंगते वलिथरथरकायंत १२१ ऊवे
रनाम पुन्यजनेस्वरवैश्रवंतधनदाल
विलहोय गुह्यजलैति त्रं वकसपारा
जराजपुनिसोय १२२ नखांहनकिंन
रप्रधियजयंगधीसऊवेरसोतुवपिय
पदपांसि वलियावतनाहिनेवर २३
वरणनांम वरणप्रचेतायामपतिअय
पतिजलवरईस जाहिसपतिपुनियीय
केवसतचरनतरसीस १२४ सेषनांम
सेषमहाअहिसरयपतिधरणीधरतअ
नंत सहस्रवदनकरिगुंनगुंनतुतदपि
नयावतअंत १२५ गणेशनांम देमातु
रहेरंवपुनिलंबोदरइकदंत मूषकवा
हनगजवदनगणपतिगिरजातंत १२६
जनमनांम नवउदनववकुभजनमज

नउतपतिहैनांम जनमसफलतवहीज
हैनजियेसुंदरस्याम १२७ श्रीनाइकाव
चन वंचकनांम व्याजजिह्न कैतवकु
टिलछदमीधूरतछलीज कपटीकाह
रऊंवरकीकेतीकहततलीज १२८ स
षीवचन मृगनांम ऐंहीहिरणवातपवि
षदहरिक्ररंगमृगआय मृगसि सुकेसे
इगलीएवलिथोरैइतराय १२९ पापनां
म एतव्रजिनडुकेतडरितअधममलीम
सपंक अधअमीचकिल्वषकलुषक
समलसमलकलंक १३० पापमहाव
नदहनदवजाकौरंचकनांव ताकोंतुव
कपटीकहतकहाकहों वलिजांव १३१
पथरनांव ग्रावअसमपथर पलसि
लयषणअतिसार पांहनपांनीपरतरै
जाकेनांवअधार १३२ नौकानांव उम
पपोतनवकापलवतरिवौयहजलजां
नि नांवनावचहिनौउदधिकेतेतरेअ

जान १३३॥ लोहीनाम॥ ओणितरक्तक
कोणयुनिअष्टादशतजात लोल
पियनीपूततापूतनईछैगात १३४ राक
सनांम कोणयअश्रयधुंऐजनक्के
तडुरनाद आस्वरकरबुदानिसाचरजा
तधांनकरिआद १३५ अधसेराघसपा
यकीमेंदेवीगतिहोत उलटिसमांनीपी
यमोंप्रगटीजाकीजात १३६॥ धूरनाम
॥ धूसरधूरीषेहरजयांसुसरकरामद
जापदपंकजपरसकोंवच्छतसनकसन
द १३७ महादेवनाम गंगाधरहरस्त
धरससिधरसंकरवांम सरवस्वयंभूत
मभवंगीकांमारिपुनांम १३८ तिनइन्
त्रंवकत्रिपुरारिईसउमापतिहोयज
टीपिनाकीधुरजटीसुखविष्णुमधुवासोय
१३९ उग्रकपरदीभूतपतिपसुपति
इंडसांन बृषभध्वजश्रीकंठ सितक
वकमतकल्मीक १४० महादेवसेदेवताजा

कौधरतजुध्यांन सोकांन्ह रकपटी
 कियौकौहैकहासयांन १४१ सूर्यनाम
 सूरदिवाकरविनाकरदिनकरनास्क
 रहस मिहरतिमरहरसहसकरउमर
 सि तिगसंस १४२ विघनवि रोच
 नविनावसूमार नमत्रयअंग दिनमा
 णिअंवरमणितरण सवितापतंग
 १४३ चित्रनांनब्रह्मनांनधुनिविव
 सथानंदुतवांन अंसुमानहरिनांनइन
 जगतचक्षुनगवांन १४४ रविमंमलमं
 नननवलधंननतमसंसार सोकांन्ह
 रकपटीकौयौजगजाकेआधार १४५
 निकटनांम इतपारसअवधूरतटउप
 समीपअन्यास अवसिअनादरहोयजो
 रहेनिरंतरपास १४६ चंदननांम गंध
 रसारश्रीधंनहरिमलयजमईपटीर
 चंदनकौईधनकरतमायावासीजीर
 १४७ मछनांम स्यफरीअनामिषतस्य

तमप्रथुगेमाजघमीन मकरअल्पी
अंमनववैसारणयागीर १४८ क्षीरसु
मुद्रकेमीनजिमवसतचंदटिगाआहि
चंदहिमुंदनजांनहीजलचरमांनता
ताहि १४९ समुद्रनांम सिंधुसरितप
तिसलिलपातिअंबबैनिधिकूपार ५
राधांतअरणवजलधिकुकुसनअ
बाधिअपार १५० रत्तनाकरगुनरूप
कोमोहनगिरधरलाल जिहिमयेम
कीलौलियेयौनबोलियेवाल १५१
मरकटनांम कपिसाधाम्रबल्लेमु
षकीसपलवलांगूरवांदरकरवरना
रिवरदयोबिधाताकर १५२ श्रीनाइ
कवचन वलनइनांम रोहणोयवल
नइवलसंकरषणवलरांम नीलवर
रेवतरमनमुसलीपालककांम १५३
प्रलंबधनतालांकपुनिजमुनांनेदीवे
त ताहलधरकेवीरकौ ॥

त १५४ प्रीथीनांम पृथ्वीछितप्योणीक्षमाध
रणिधरित्रीगाय उरवीजगतीवसुमतीवसु
धासरवसुहाय १५५ अचलापियलासाग
राधरालवायरहोय गोत्राअवनीऊंननी
महोमेदनीसोय १५६ विस्वंचरवसुंधरा
शिराकास्पयप्राहिरसाअनंताभूइलावि
लाकहतकविताहि १५७ सवधरिजिहिं
इकसीमपरसोनिताजिमकणहीर क्योआ
वेतोआंषितलताहलधरकौबीर १५८
कनांम धगतोमरजिह्नगअसुराविसि
षसिलीमुषवांण कणनरगणनाराचइष
धात्रीसोषणयांण १५९ साइकधाइपि
राइपुनिसिमटिसरीरमिलाय वचनतीर
कीपीरवलिमिटैनजुगजगजाय १६०

अगलितनांम॥ पावकवहूनीवहूनीजलनकहि
स्विधीधनंजयहोय सुखंउपरबुधवोतसष
वीतहोत्रपुनिसोय १६१ चित्रनांनब्रह्म
नांनपुनिविवसथांनडुतवांन आसुमां

पुनि

लनि

नहरिनांतदन्तनिरजुसिंहिकसांन १६२
अगनिदगधजेडुमलताफिरिफिरिफल
हिंदेत वंयनदगधजेजीववलिबक्रिअं
कुरिनलेत १६३ आग्यनाम मंदसुगंधन
दुमुकनदुआमिकद्ववहिसंठ मूरखजेन द
जोनैकहामनिजैमैकपिकंठ १६४ तंगि
नांमः कृतीकुसलकोविदनिपुनधिएप्रव
णनिसांनत पयविदगधनागरवजुरजा
नेंसकीवात १६५ अपराधनांम अमैआ
गससहेलनअहितजदयिओगुनयीयः
कयध्वं हजिमराधियैयोननाधियैतीय
१६६ ॥ सनेहनांम ॥ दोहदहोदससनेह
हितप्रणतिरागअनुराग कितकैगोतेरो
प्रमअवहेनांमिनिवरुनाग १६७ परवत
नांम अगतगभूअतदरीवतशृंगीसिधर
होइ सयलसलोचनगोत्रहरिइंद्रअचल
पुनिसोई १६८ गिरगोधनजववांमकरध
स्योस्यांमअनिगंम तौउरतैअवधुकधक

अवलौमिटीनवांम १६९ सप्यनांम यनग
 नागजिह्मगउरगनुजंग ~~अ~~सप्य चतुश्र
 वाहरि ~~अ~~प्रयका कोदरगदरय १७० का
 लीअहिगंजभनसमैमैगाहिराघीवांह सं
 वरेपियकेयैमवसपरतऊतीदहमाहि १
 ७१ वाधाविबुधो^{उज}विथा~~अ~~प्रीमाअति
 लान अवजमपरसतपियरपियकितसी
 घीयहवांन १७२ वननांम काननविपुल
 आरण्यवनगहनकषिकांतर अरवीमै
 अकेलेदर्द्रमोन^हनंदकुंवार १७३ दैतनां
 दानवदनजैदैत्यपुनिसुररियअसुरअसं
 त मायासुपीरैनदिनमोलतअसुरअनंत
 १७४ रिष्टकषेद्रकपाणअसिममला
 कवाल मगजेतौतौकहाधावकरनक
 होवाल १७५ निसानांम घणिदाक्षयातप
 स्वनीतमीतमिश्रासाय निसासरवरी ना
 चरीरात्रीतियमासाय १७६ सुषदमुहाईस
 रदकीकेसीजांमिनिजात चलिवालिनोह

सरी

जानांम

गानंम

नलालपैक्योंवैरीइतरात १७७॥ आकास
नाम॥ अंबरपुष्करननवियत अरीष्यध
नवासगगनअनंतविहायसीस्वरवद
१७८ गगनजुउमगनवनिरहेत
नकचहोतनरोषदेधनतेरौरूपजनसुर
त्रियकिएऊरोष १७९ सूखमनांम तुछ
अलयबलिसुधमतननिर्धकसोदरतोर
कहिवलिइतनौमांनसचराष्योहैकिहि
वोर १८० माकरीनांम लूतासूत्रामरक
टीउतरनाजिकाहोयजनकुंजमकरीगु
रकरीपकरीसविद्यासोय १८१ मारगनां
म वरतमअध्वसरणपथयुनिसंचरण
विहार मंगदेधतआतुरनईकैहैनंदक
मार १८२ हिसानांम कन्यकाष्टकऊ
नदिसिगोआसाइहंओर चितवतकैहै
पीवइमजिमसासिउदैवकोर १८३ सरिता
नांम सरतधुनीतरंगिनीतटनीलदनीहो
यओतअव्यतीनि

१८४ श्रैवलिनीश्रोतहसुनीदिपावतीज
 लवाल नंदीकलिदीतीरहीवैठेमदनगुण
 ल १८५ वृच्छनांम साधीविटपीअनोकुह
 क १८६ डुरमपादपटहोय ब्रह्मदलीप
 श्रीफलीबिच्छदहीसहसोय १८७ कल
 पतलैतरैतलपरविअलयकलयसेजात
 इतइहप्यारीपीतमांसूधेकरतनवात १
 ८८ पत्रनांम परणपत्रदलवाहिरछद
 जवषटकतकरयात तुवआगमभ्रमचौ
 कियियउठिउठिउतलौजात १८९ पव
 ननांम स्वसुनसदागतिमसतहरिअंसु
 गजपतजुषांत अनिलधनजनगंधव
 हिनमोनधवमान १९० तुवतनपरम
 लैपरसिजवगवनतधीरसमीर ताकोव
 ऊसनमानकरिपरिरंजनवलवीर १९
 १ वज्रनांम असनकुलिसनेधीतराव
 असुतेरीनांवे परोबुरेकेधामपरजे
 विसरकरैरसमांवे १९२ लज्पानांम ऊ

लज्जाव्रीमात्रपासकुचनकारिविनुकाज
चलिवलिप्यारेपीवमिलिओषदधातंकी
लाज १९२ आतानांम अनुजंअवंसनां २३
मिधुनजंविष्टकनिष्टकनीय लघुआता
कीकामकुचसषास्यामकौतीय १९३ पि
तानांमतीतजनंकसवितापिता वावातोह
गुणधाम तोषहिलेनंदलालकौदेतऊते
मैनाम १९४ मदिरानां मधुमाधूिमदिरा
मिरासुरावारुणीसोय आसुवमंयकाद
वरीमधुवारामयहोयः १९५ सिद्धुषसं
द्रावुद्धिहाहालासिंधुप्रसूतमदयीयैजो
वकतकौकहावकतहेदूत १९६
सुभावनांम प्रकृतिनिसरगसहज
अनिमविश्रमसीसुभाव कौनटेवटेटी
परीसुंदरसरिलसुहाव १९७ समूहनांम
समुद्रंनृहंसमूकषा निप्रकरनिकरनि
कुर्वं प्ररपूगत्रजपटलचयुसंचयनिध
यकदंव १९८ विसरनवहुसदोहउषज

थवातगजा जात अक्रअनं तसमाजवडा
 ग्यामसंधात १९९ कंजजातपल
 पजलफाटअनेकमुकुंद वनतकहीमे
 वातयेनईतएकीबूद २०० अतिनाम
 अतिसयचसअलवेलअलअधिकअ
 तंतततंत अतिसर्वत्रनलीनहीकहिग
 एसंतअनंत २०१ आग्यानाम वडआदे
 सनेदेसधुनिआग्यासासनजोग आइस
 कैअवजोहिघरलहेपीतकेलोग २०२
 रंचकनाम दरसतोषईधदअलघरंचकम
 दमनीक तदिपियसहचरितनचितैमुसकी
 कुंवरितनीक २०३ यनहीनाम पादआण
 पदपीवसुनभयनहीजरीजराई यनहीमन
 हीनांवतीआगेंधरीवनाई २०४ महलना
 म सोंधहर्मप्रक्षिप्तादतैचलीकुंवरिगति
 मंद उजलजलधरतैमनौअवनीआव
 तचंद २०५ मकरमरीचीनाम ज्योड्झा
 कोमदीचंद्रिकामकरमरीचीनामजोला

मीपसरतिगांवमैथ्योरोहसिवलिगांव २
 ०६ वीथिनाम रथ्याप्रणयतो लिकाअ
 हरवीथिकासाय दूहिविधिचलीजाति
 वलिजैसैलधेनकोय २०७ अधिकार
 नाम अंधतम्पश्रनकावतमद्रांतक
 रनीहार तिमरमिथोमगसांककैतदन
 चंदउजियार २०८ वागनाम कृतमव
 तउद्यानपुनिउपवनसायअगंम २०९ १
 दावनवागतवदेयिवलिचविकाकीम
 २०९ बसंतनाम कुसमाकर्गंतगना
 निमुरांतियहनुवसेत मालीनिमनगव
 तुरहेदिनदिनअधिकलसंत २१० पंढी
 नाम विजयंकुतपंढीसकृतिमददि
 हगविहंगव्यनगागतिजिगअगग
 पतगपतेग २११ घागनामकेकरत
 लकेमनकेदुसुनामदतनककल
 दिजकुतकतगगगगद २१२ क
 कागनाम अगगगगगगगगगगग

हितरातेयात तव आगम आनंद तैतन अ
 नुराग चुवात २१३ पीपलनांम चलदल
 पीपलगज असन बोध त्रिष अस्वसथ पी
 पलदेवलिदाहितै जोरि हाथ धारिमथ २
 १४ पाकलनांम थाली पाकल फल रुहा
 वामास्यामानांम अंववसामधु इतिका
 पाकल करत प्रणांम २१५ नूतनांम पि
 कवल जकामांग पुनिमादिरासध सहकार
 नुतर सालकीवाल वलिनेजर हीफल
 नार २१६ चंपानांम चंपै इचंपक सरन ३
 हेमपुह पसुकुमार यह चंपा पांय निप
 र तिलिचै पडु प उपह २१७ रक्तबीज हा
 लंकर कसुक प्रिय डुममार वलिदारिम
 पां परै कछु तुवद सनकार २१८ क
 दलीनांम रंता मोचा गजर साभा नुफला
 सुकमार इह कदली पां परै तव ओरनि
 अनुहार २१९ नालेरनांम मुरनिमलू
 विसदा फलै तालु विल्व मालूर एश्रीफ

क

लतुवकुचनसमकहतवोहोविकुर २२०
क्रमदनांम नीपतालपक्किवक्ररिमिदरा
गंधसुवाह २२१ कंदंवतलकांन्हजूचदि
कूदेदहमांह २२२ वहेमानांम अषिवि
भीतककरषफलसंवरतकवलत्रषि
नूतावासवहेरतलकैजिनचालिमृगअ
षि २२३ ॥ कैवचनांमा कोलवालेकी
कपिलताविश्रुसीपुनिनांव कंकक
रतयाअंगमेंकोछिनछैवालिजांय २३
सुपारीनांम घोडाक्रमकगवांकपुनिपुं
गसुपारीआहि वारीवारीकहतवलिरं
चकषातनवाहि २२४ मिरचनांम ति
क्ताउषणाकोलिकाकृष्णफलापुनिनां
व मिरचलतायाएपरतजलीकरीवलि
जांव २२५ पीपलनांम कोलाकृष्णमा
गधीतिगमत्वंमलास्तोय वेदेहीस्यामाक
णासुंमीकहियैसोय २२६ इहपीपलव
लियगगहतकहतवोहोतप्रकार

इतनीकरिऊंचरिषीतमपानप्रधार २२७
 सुठिनांम विस्वानागरजगविषकमहाप्रो
 षदीनांम इहसुंठीगुंठीगुननकहतकिब
 लिवलिजांव २२८ दाघनांम स्वादीमृड
 कामधुरसाकालमेषकाहोय गुमाब्रवाला
 गोसतनीचारफलापुनिसोय २२९ गुजानां
 म वाकवच्यकाकृष्णालागुंजाकरतपणा
 म मूषजूस्पृशतामनकुवालेतस्यांमको
 नांम २३० केसरनांम कासमीरऊंऊंम
 रुधिरदेववल्लभानांम कोसमरिद्रगभरि
 पगगहतकहतकिवलिवलिजांव २३१
 जूथिकानांम हरिणीगणिकाजूथिका
 हेमपूषिकाजायः जूथीगूथीगुननकी
 गढीलेतवलाय २३२ मालतीनाम सु
 मनाजातीमालिकाउत्तमगंधाहोय अव
 ष्टाप्रियवादिनीराजपुत्रिकासोय २३३
 एहमालतीपीड्यरैशूषिकहमाहेतास
 कच्छुएकतवतनवाससोमिलतजास

कीवास २३४ ऊंदनाम माधीऊंदलता
 ललितपगगनकरतबऊनांति याकीक
 लियनमैकछूतवदसननकीकांति ३५
 बंधुनाम बंधूजीववधूकपुनिजपाकह
 तकविताहि उपहरफूलफूलियेनिसफ
 लेतोहियाहि २३६ केतकीनांम ताल
 धिजुरीकएणडुमाकेतकीपकरतपाइ त
 वआगमआनंदतेफलीअंगनमाइ २
 ३७ लोगनांम देवऊसमश्रीसंगपुनि
 जायकजाकोनांव इतलवंगकीवेलिव
 लियगनिपरतवलिजांव २३८ वरनांम
 जरीकपरदीरकतफलवऊपदधकव
 निओध यहवंसीवटदेधिवलिसवरस
 कोअवरोध २३९ सरोवरनांम ऊदप्र
 षकरकासरफूल्यैतवअनुसगससर
 सीतालतमांग एहदेधिवलिमांससरफ
 ल्यैतवअनुराग २४० जमुनानांम अनु
 जातरनीजायमीकृष्ण ॥ ॥ ॥

तरंगनाम संगतरंग कलोलपुनि
 वीचसुनाय लहरीहाथयसारिज
 नायकरतपाय २४२ तीरनाम ऊ
 पनउपकंठतरतीररोधअन्यास
 मीढिगचलिजाहिवल्लिएआणपिय
 २४३ वेतनाम वंजुलसीतविडल
 अन्नपाषिवालीर वाहवेतकुंजत
 होवेठवलवीर २४४ कोकिलनाम
 लरनपरिन्नतरक्तडीगापिकधुनित
 गपवंज जनपियसुंदरतोहित्रिषटेर
 हेवल्लिऊज २४५ सवदनाम नादन
 पदरस्वरसुषिररतसुसनधनराव वे
 मसीकरकहतहेहेयाणेसुरआव २
 ४६ इंद्रीनाम गोरषीकषवरणागुण
 इंद्रीज्योअमुधाय योराधामाधवमिले
 परमप्रेमकैनाय २४७ जुगलनाम जु
 गलजुगमजुगदिदिदेउनेमिथुनवि

विवीया जुगल कि सोर सदा वसै नंददास
केहीया ॥ २४ ॥ गारसनामा सारध मधयुनि
पूषिरस कसम सारम करंदा रस के जां
नत हार जन सुनियो वै सुष कंदा २४ ॥
मालानां माला श्रवती गुणवती २४
जुनां मकी दां मजे जन करि है कंठ २४
कै है छवि कौ धां मा २५ ॥ इति श्री मां
नमं जरी संपूर्ण ॥ सं २५ ॥ द्वासी तीलाद
वास्तु २५ ॥ शन नार ॥ पोथी नीतराव
ल देव कैली विछे वाचै जी नराम रामा

